कुमारी सोमाद्विवेदी एवं श्री सुनीलकुमार पाण्डेय
के
पावन पाणिग्रहण की वेला में प्रकाशित
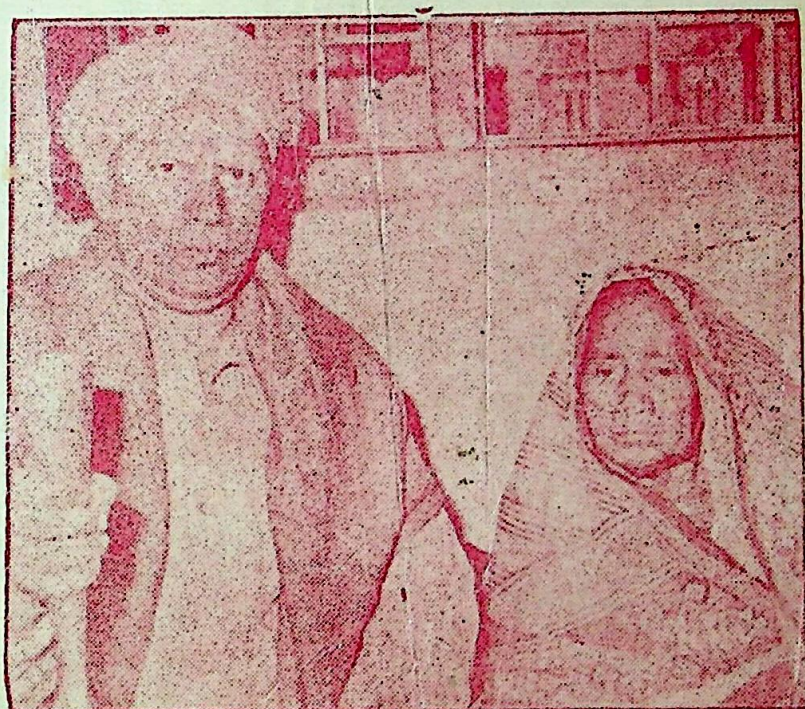
[आदरणीया माता श्रीमती रजला द्विवेदी के लिए रुद्राभिषेक करते हुए प्रथम पुत्र प्रो० श्री कृष्णचन्द्र द्विवेदी]

प्रो० कृष्णचन्द्र द्विवेदी तथा श्री महातम पाण्डेय
(पूर्ववेदवेदाङ्गसंकायाध्यक्ष सं०सं०वि०वि०) अधिवक्ता देवरिया
के
संयुक्त परिवार का परिचय

महोदय,

सरयूपारीय ब्राह्मणों के विवाह में अब तिलक की प्रथा चलने लगी है। उनको उस तिलक धन में से कुछ अंश सामाजिक कार्य के लिए दान करना चाहिए। संस्कृत पत्रों को आज समाजवादी सरकारें अनुदान नहीं दे रही हैं। यदि गुणपरक ब्राह्मणत्व की रक्षा करनी है तथा भारतीय संस्कृति को अनुस्यूत रखनी है तो संस्कृत के पत्र गाण्डीवम् को ज्यादा से ज्यादा सहायता दें। गाण्डीवम् इसके लिए आभारी होगा। संयुक्त परिवार के आदर्श रूप के प्रकाशन के साथ सामाजिक दायित्व को ध्यान रखते हुए गुणपरक ब्राह्मणत्व की रक्षा हेतु यह परामर्श दिया जा रहा है।

लेखक तथा प्रकाशक

प्रो० पारसनाथ द्विवेदी

आचार्य तथा दर्शन संकायाध्यक्ष

संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

मङ्गलं भगवान् विष्णुर्मङ्गलं गरुडध्वजः।
मङ्गलं पुण्डरीकाक्षो मङ्गलायतनोहरिः॥

सरयूपारीण ब्राह्मणों में भारद्वाज तथा सावर्ण्य गोत्रों की वैवाहिक परम्परा

वैसे तो पूरे भारत में गोत्र प्रवर्तक ऋषियों में प्रमुख चार ऋषि माने जाते हैं और इनसे सम्बन्धित सात या आठ ऋषियों का विवरण विविध धर्मशास्त्रों में पाया जाता है। इन सात ऋषियों के गणों में सभी अन्यान्य गोत्र एवं प्रवर कारक ऋषि एवं तपस्वी महात्मा आते हैं। ऐसे ही ऋषियों एवं महर्षियों में भारद्वाज तथा सावर्ण्य का नाम लिया जाता है। जो आज के भौतिकवादी युग में भी विभिन्न परम्पराओं के क्रम में उपलब्ध होते हैं। प्राचीन भारत के ऋषि पर्वतों की घाटियों या उपत्यकाओं और नदियों के संगम तट पर रहते थे। सामवेद २।५ स्वयं कहता है—

"उपह्वरे गिरीणां सङ्गमे च नदीनां धियो विप्रोऽजायत।"

अर्थात् पर्वतों की उपत्यकाओं और नदियों के संगमों पर विप्र पैदा हुए। महाभारत के वन पर्व में आया है कि देविका नदी के तट पर ब्राह्मणों का जन्म हुआ। वह देविका आधा योजन (६.४ कि० मी०) चौड़ी तथा पांचयोजना (६४ कि० मी०) लम्बी है। देविका नदी के तट पर जन्म लेने के कारण प्रारम्भ में सभी ब्राह्मण दाविक कहे जाते थे। कहा भी है—

अर्धयोजनविस्तारा पञ्चयोजनमायता।
एतावती देविका तु पुण्या देवर्षिसेविता॥
तस्यां सर्वे समुत्पन्नाः, ब्राह्मणा द्विजसत्तमाः।
अनेन हेतुना विप्रा दाविकाख्याः प्रकीर्तिताः॥

म० वनपर्व अ० ८२।१०७

ततो गच्छेत् राजेन्द्र ! देविकां लोकविश्रुताम्।
प्रसूतिर्येन विप्राणां श्रूयते भरतर्षभ॥ वही १०८

ऐसे पवित्र जगह पर रहने वाले ब्राह्मणों तथा उनके वंशजों का स्वरूप देविका से संपृक्त सरयू के साथ प्रारम्भ होता है यह उत्तर प्रदेश की देवहा या देविका नदी सरयू की एक धारा मानी जाती है। वह वायु पुराण में मानस-सर के पश्चिमी तट पर मानी गयी है और उससे सरयू का प्रवाहित होना बताया जाता है—

देविकापश्चिमे पार्श्वे मानसं सिद्धसेवितम्।
तस्याः प्रभवति पुण्या सरयूः शृणु सादरम्॥

वायु ख० १ अ० ४७।१४-१५

देविका, घाघरा तथा सरयू का समन्वित प्रवाह कहीं सरयू, कहीं घाघरा और कहीं देविका या देवहा नदी कही गयी। सरयू की अन्य सहायक नदियों में अजिरवती या अचिरवती है। यह अवदानशतक में ऐरावती कही गई है। काशिकाकार ने इसको राप्ती कहा है, जो गोंडा, वस्ती आदि जनपदों से होती हुई गोरखपुर, देवरिया जनपदों में बहती हुई बरहज बाजार के पास सरयू में मिलती है।

(ब्राह्मण समाज का ऐतिहासिक अनुशीलन पृ० ३)

इसी प्रकार सरयूपारीण ब्राह्मणों के अंचल विस्तार में गण्डकी तथा नारायणी का तट भी महत्त्वपूर्ण माना गया है। महाभारत में (२।७९४) गण्डकी और सदानीरा अलग-अलग मानी गयी है। गण्डकी देवरिया के पूर्वी छोर पर बहने वाली कृशकाया नदी है और नारायणी ही सदानीरा है जिसको वेवर ने भी मान्य माना है। (राजबली पाण्डेय—हिन्दू धर्मकोश पृ० ६५४)। गण्डकी तथा सदानीरा नामक नदियाँ सीवान के दरौली में तथा छपरा के हरिहर क्षेत्र में आकर क्रमशः सरयू तथा गंगा से मिलती हैं। अतः सरयू-पारीण या सरवरिया के रूप में विकसित क्षेत्र उत्तर प्रदेश के बहराइच, बस्ती, गोरखपुर, देवरिया एवं बिहार प्रदेश के चम्पारण, गोपालगंज, सीवान तथा छपरा आदि प्रदेश बनते हैं। यह देवरिया जनपद के 'लार' नामक कस्बा में प्राप्त ताम्रपत्र (वि० सं० १२०२ ई० ११४५) से पता चलता है। यह गहडवाल शासक गोविन्दचन्द्र देव द्वारा लिखवाया गया था जिसमें सरवार शब्द का स्पष्ट प्रयोग है। (श्रीमद् गोविन्दचन्द्र देव विजयी। सरवारे दुधालीसम्बद्ध गोविशालके पण्डलापत्तल्यां—ए० ई० जि० ७ पृ० ९९) देविका नदी की उपत्यका में बसने वाले ब्राह्मण आदिगौड कहलाते हैं जिनकी

विशेषताओं का वर्णन करते हुए श्री परमेश्वराचार्य ने कहा है--यहाँ के ब्राह्मण हल नहीं चलाते, धूमपान नहीं करते, विवाह में कन्यापक्ष से दहेज की माँग नहीं करते। आदि गौड़ों को पूर्विया गौड़ भी कहा जाता है, जिसका विवरण निम्नलिखित रूप में प्राप्त होता है—

आदिगौडसमीपस्थात् पञ्चगौडाद्विनिर्गताः।
पञ्चद्रविडसंभूताः कथयामि यथाक्रमात्॥
सारस्वताः कन्याकुब्जा गौडाश्चोत्कलमैथिलाः।
पञ्चगौडसमाख्याता विन्ध्योत्तरवासिनः॥
कर्नाटकाश्च तैलङ्गा द्राविडा गुर्जरास्तथा।
महाराष्ट्राश्च पञ्चैते विन्ध्यदक्षिणवासिनः॥
तेऽभ्यो विनिर्गता भूम्यां चतुरशीति ज्ञातयः।
अन्येऽपि बहवः सन्ति प्रकीर्णाश्चोपब्राह्मणाः॥
गौडद्रविडभिन्नास्ते मिश्रिताः सर्वजातयः।
वसन्ति दैवयोगेन ब्राह्मणा यत्र तत्र वै॥
परस्परं ते विप्रा ह्यभवन् भिन्नपंक्तयः।
भोज्यपानसदाचारात्सम्बन्धोऽप्यभवत्पुनः॥

आदिगौड़ों के समीप स्थित पञ्चगौड़ों से पञ्चद्राविड पैदा हुए। इसीलिए सरयूपारीण परम्परा के आचार्य पंडित राजनारायण शुक्ल ने सरयूपारीणों को ही मूल ब्राह्मण माना है और कहा भी है—

अयोध्या दक्षिणे यस्मात् सरयूतटगाः पुनः।
सारावार - देशोऽयं गौडास्तदनुकीर्तिताः॥

अर्थात् सरवार प्रान्त के दक्षिण में अयोध्या स्थित है और तत्समीपवर्ती गौड़ों का मूल स्थान है। इसी को परमेश्वराचार्य ने आदिगौड स्थान कहा है। ये ब्राह्मण पौराणिक आख्यानों में भगवान् राम के द्वारा पूजित माने जाते हैं अतः इनका समग्र ब्राह्मण समाज में महत्त्व माना जाता है। ब्राह्मणों का स्वरूप तथा गोत्र प्रवर विभेद "गोत्रप्रवरमञ्जरी" नामक ग्रन्थ में बताया गया है। उसका हार्द संक्षेप में प्रस्तुत किया जा रहा है—

"तत्र कल्पसूत्रपुराणस्मृतिकारैः एकेनैव क्रमेण गोत्रप्रवरकाण्डानि उपदिष्टानि। येनैव क्रमेण तान्युपदिष्टानि तेनैव कमेण तानि वक्ष्यमाणानि भूदेवानामबहुश्रुतानामुपकाराय सुखग्रहणाय च अनुक्रमिष्यामः।

आदिस्तावद्गोत्रप्रवरोपदेशकर्तव्यताहेतुसन्दर्भगर्भाणि परिभाषा-सूत्रकाण्डानि उपदिष्टानि तेषु च गोत्रप्रवरतत्संख्या विधिपराः प्रत्यक्ष-श्रुतयः तैत्तिरीयाः शाखान्तरीयाश्च।

परिभाषासूत्रकाण्डेभ्योऽनन्तरं भृगूणां गोत्रप्रवरतत्संख्योपदेश-पराणि सूत्रकाण्डान्युपदिष्टानि। भृगुसूत्रकाण्डेभ्योऽनन्तरम् अङ्गिर-सानां गोत्रप्रवरोपदेशपराणि सूत्रकाण्डानि त्रिविधान्युपदिष्टानि गौतम-भरद्वाज-केवलाङ्गिरसानाम्।

अतः परमत्रीणां गोत्रप्रवरोपदेशपराणि सूत्रकाण्डानि उपदिष्टानि। ततः परं विश्वामित्र-कश्यप-वसिष्ठानां गोत्रप्रवरोपदेशसूत्राण्यु-पदिष्टानि। तदनन्तरमगस्तीनां गोत्रप्रवरोपदेशपराणि सूत्रकाण्डानि उपदिष्टानि। तदनन्तरं क्षत्रिय-वैश्य-सार्ववर्णिक-मानवप्रवरोपदेश-पराणि सूत्रकाण्डानि उपदिष्टानि।"

इस प्रकार संक्षेप में भारतवासियों के गोत्र प्रवर का विवरण उपलब्ध होता है।

भरद्वाज और उनके वंशज

कहा जाता है कि ब्रह्मा के यज्ञ विधान से ७ प्रकार के मूल ब्राह्मण पैदा हुए। इनमें से पुलह तथा पुलस्त्य राक्षसों एवं पिशाचों के पूर्वज माने जाते हैं और ऋषि वसिष्ठ की तत्काल मृत्यु के कारण मूलगोत्रकारक चार ऋषि बच गये, जिनके नाम हैं भृगु, अंगिरा, मरीचि और अत्रि। ये ही बाद में सप्तर्षि या आठ ऋषियों के जनक कहलाये। कहा भी है—

मरीचिरङ्गिरा अत्रिः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः ।
षडेते ब्रह्मणः पुत्रा वीर्यवन्तो महर्षयः ।।

इनमें से मूल रूप से बचे चार ऋषियों से जो पैदा हुए उनका विवरण निम्नलिखित प्रकार है—

भृगु	जमदग्नि
अंगिरा	भरद्वाज गौतम
मरीचि	कश्यप वशिष्ठ अगस्त्य
अत्रि	अत्रि विश्वामित्र

ये मूल अष्ट ऋषि ही समग्र भारतवर्षीय लोगों के गोत्रकारक गणपठित ऋषियों के द्वारा मान्य माने जाते हैं। प्रस्तुत प्रसंग में ऋषि भरद्वाज की चर्चा की जा रही है। भरद्वाज के वंशज तीन रूपों में प्राप्त होते हैं, वे हैं— (१) केवल भरद्वाज, (२) द्वामुष्यायण या द्विगोत्रोत्पन्न तथा (३) क्षत्रोपेत ब्राह्मण। केवल भरद्वाज के गण में कुछ ऋषियों की गणना है उनमें तीन प्रमुख हैं वे हैं अंगिरस' बृहस्पति तथा भरद्वाज। इन ऋषियों की सन्तानों का पारस्परिक विवाह नहीं होता था। भरद्वाज गण में पठित ऋषि ३७९ हैं जिनको कात्यायन या बौधायन सूत्रों की गणना से जानना चाहिए।

वेदों में ऋग्वेद में १० मण्डलों का विवरण प्राप्त होता है। इनमें द्वितीय मण्डल से सातवें मण्डल तक के मण्डल कुल-मण्डल कहलाते हैं जो विभिन्न ऋषियों के नाम से जाने जाते हैं। गृत्समद, विश्वामित्र, वामदेव, अत्रि; भरद्वाज तथा वशिष्ठ। आठवाँ मण्डल भी कण्व एवं अंगिरस के नाम जाना जाता है। पर नवां तथा दशवां एवं प्रथम इस प्रकार पारिवारिक ऋषियों के साक्षात्कार के विषय नहीं हैं। प्रसिद्ध धनुर्विद्या के पण्डित आचार्य गुरु द्रोण घृताची तथा भरद्वाज के पुत्र थे कठोपनिषद् के कर्ता कठ भी भरद्वाज के शिष्य रहे हैं।वह काशी के राजा दिवोदास के भी संप्रेरक रहे हैं। वह यजुर्वेद के कृष्ण एवं शुक्ल शाखाओं के भी संप्रवर्तक माने जाते हैं।

अर्थशास्त्र में भरद्वाज को नीति तथा राजविद्या का मान्य विद्वान् माना गया है। मन्त्रगोपनक्रम में कौटिल्य भरद्वाज का मत बतलाते हैं। भरद्वाज की शिक्षा अत्यन्त प्रसिद्ध है। पाणिनि ने भरद्वाज को मान्य वैयाकरण माना है। आयुर्वेद के परंज्ञाता के रूप में भी भरद्वाज की प्रसिद्धि है। कहा भी है—

आयुर्वेदं भरद्वाजश्चकार साभिषक्क्रमम्।
तमष्टधा पुनर्व्यस्य शिष्येभ्यः प्रत्यपादयत् ॥पृ० ११-२८

भरद्वाजगोत्रीय ब्राह्मण आंगिरस, बार्हस्पत्य, भारद्वाज के नाम से विख्यात होकर तीन प्रवर वाले बनते हैं। जिनका वेद शुक्ल यजुर्वेद है, उपवेद धनुर्वेद है, शाखा माध्यन्दिनी, सूत्र कात्यायन, शिखा एवं चरण-दक्षिण। दक्षिण का अर्थ है शिखा को दायें घुमाकर बाँधना तथा दायाँ पैर धोना या धुलवाना। कुलदेव भगवान् शंकर हैं। इस कुल का आदि स्थान सरार (मझगवां) है। सरार गाँव सतासी (रुद्रपुर) के राजा के द्वारा इन ब्राह्मणों को दान में प्राप्त हुआ था। इनका नाम धर उपाधि से भी अलंकृत है। कहा जाता है कि श्री रूपधर द्विवेदी नामक किसी तपस्वी ने अपने तपोबल से राप्ती नदी की धारा को मोड़ दिया था। फलतः इच्छानुसार धारा को मोड़ देने के कारण इस कुल के व्यक्तियों के नामों में धर उपपद लगने लगा। कुछ लोगों का कहना है कि चन्देल राजाओं के दानपत्रों में भारद्वाज ब्राह्मणों के नामों के साथ धर या पाल का उल्लेख है। चटखारी दानपत्र (१३४६ सं.) में भरद्वाज ब्राह्मणों के नामों के साथ धर नाम संलग्न है। अतः उक्त नामों के आधार पर संभवतः यह उपपद लगना प्रारम्भ हुआ होगा।

सरार में २० अप्रैल १९५८ तक १० पंक्ति पावन ब्राह्मण अवस्थित थे तथा ४५ घर पंक्तिविहीन ब्राह्मणों के पाये जाते थे। यह श्रीकृष्णदेव पाण्डेय द्वारा लिखित 'ब्रह्मदर्शनम्' नामक पुस्तक के पृ० ३०४-५ के द्वारा जाना जा सकता है। इस ब्राह्मणवंश परम्परा के निम्नलिखित सरयूपारीण गाँव प्रसिद्ध हैं––

सरार, मझगवां, बड़गो, बढ़या, उचेला, कुचेला, कुड़वरिया, केशवली, गुरमापुर, चरईपट्टी, छपहा, जलालपुर, टनटनवापुर, तिलसरा, दत्तापुर, धाराधरी, नकाही, नीली, पटवरिया, पड़रहिया, पारा, पुछेला, बढ़या पार, बड़कागाँव, बड़गैया, बड़गो, बड़सरा, बतसा, वरगदी, विनवेदीवाले, वेलवा, वेलौरा, वैकुण्ठता, वेदौली, भितहा, मझौवा, मभरखा, भरसड़ा महुलिया, मानपट्टी, मुड़हा, रजहवा, रमपुर, रमवापुर, लेजरुआ, संकठपुर, सझवां, सहुआकौल, सेंधवा, सौरी, हड़गड़ी, दातापुर, चकरी, शाहपुर, धरमपुर, सजांव आदि प्रमुख गाँव हैं। पंडित कुवेरधर द्विवेदी के पुत्र प्रो० कृष्णचन्द द्विवेदी का गांव सजांव है जिनका वंशवृक्ष शाखोच्चार विधि के अनुसार निम्नलिखित प्रकार है।

पं० कुबेरधर द्विवेदी का परिवार वंश

पं० अचरज धर द्विवेदी (प्रपितामह)
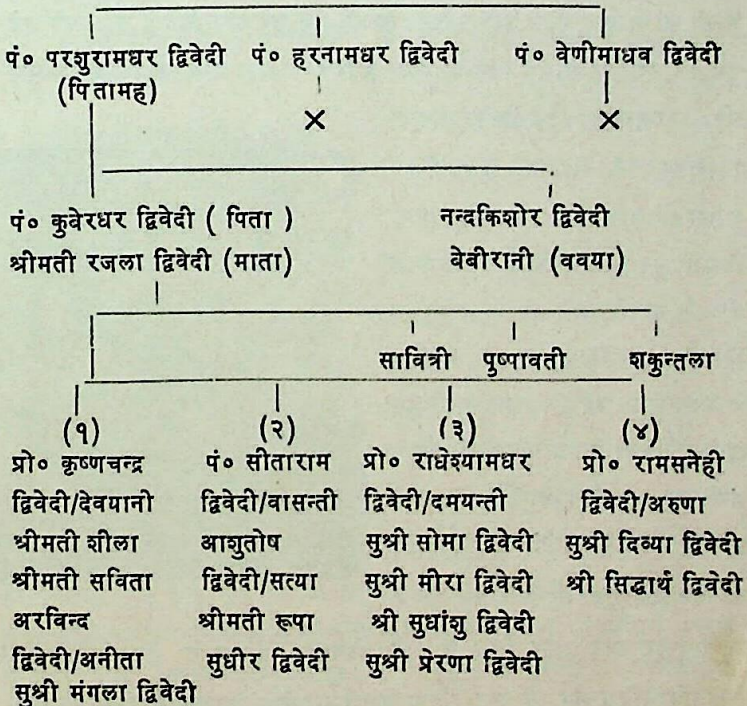
पं० कुबेरधर द्विवेदी परम्परा क्रम से यद्यपि शैव थे पर व्यक्तिगत जीवन में कण्ठीधारी वैष्णव थे। वह दोनों वक्त पूजापाठ करते थे तथा गाँव से करीब १ किलोमीटर दूर जंगल समूहों में जंगली बाबा की स्थापना कर उनकी पूजा करते थे तथा किसी भी पुनीत कार्य में उनकी आराधना के लिए अपने पुत्रों को भी प्रेरित करते थे। उन्हें उपासना के बल पर सद्बुद्धि तथा सद्व्यवहार पर पूर्ण भरोसा था। अल्पवित्त होने पर भी अपने चारों पुत्रों को पारम्परिक संस्कृत विद्या के अध्ययन में लगाया। उन्होंने अपने भाञ्जे को ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन हेतु काशी भेजा था और उनके भाञ्जे पं० रामधारी पाण्डेय जी ज्योतिष का गहन अध्ययन कर काशिकराजकीय संस्कृत कालेज से आचार्य में रीपन स्वर्णपदक से विभूषित हुए थे। वह पूर्वाञ्चल के मान्य ज्योतिषी थे पर कतिपय वर्षों के बाद पं० रामधारी पाण्डेय एवं उनके मामा का सम्बन्ध ठीक नहीं रहा। फलतः पं० कुबेरधर द्विवेदी ने अपने बड़े पुत्र को ज्योतिष शास्त्र पढ़ने के लिए प्रेरित किया, और आपके **प्रथम पुत्र प्रो० कृष्णचन्द्र द्विवेदी** ने संस्कृत-विश्वविद्यालय, वाराणसी से ज्योतिष शास्त्र में आचार्य करके 'सूर्यग्रहण-विमर्श' पर विद्यावारिधि (पी-एच० डी०) उपाधि प्राप्त की तथा संस्कृत विश्वविद्यालय में १९६३ में ज्योतिष के प्राध्यापक पद पर काम करते हुए खगोल विद्या में विशेषज्ञता हासिल करते हुए इस विभाग के अध्यक्ष एवं आचार्य रहे हैं। इन्होंने दर्जनों ग्रन्थों का सम्पादन एवं प्रकाशन कर उत्तर प्रदेशीय पुरस्कार प्राप्त किये हैं। ये वेदवेदांग संकाय के संकायाध्यक्ष तथा संस्कृतविश्वविद्यालय में पारम्परिक वेधशाला के संस्थापक विद्वान् रहे हैं।
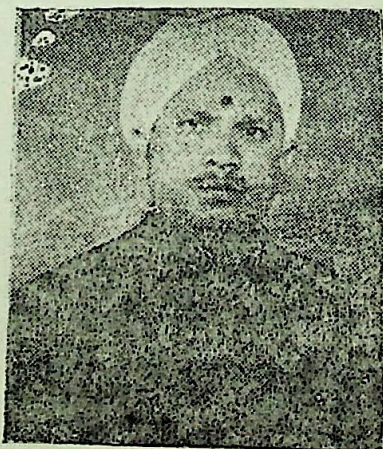
द्वितीय पुत्र श्री सीतारामधर द्विवेदी, उपनयन संस्कार के वाद विद्यारम्भ हेतु प्राथमिक पाठशाला में प्रविष्ट हुए। पर तत्कालीन गुरुओं में किसी मुसलमान गुरु के प्रकोप के कारण पढ़ न सके। फलतः खेती में अभिरुचि के कारण कृषि कार्य में लग गये तथा इसमें क्षमता हासिल की। यह कृषि शास्त्र में व्यावहारिक दृष्टि से प्रवीण साधु पुरुष हैं। माता पिता तथा पारिवारिक वन्धुत्व के लिए समर्पित मूर्ति हैं।

꧁
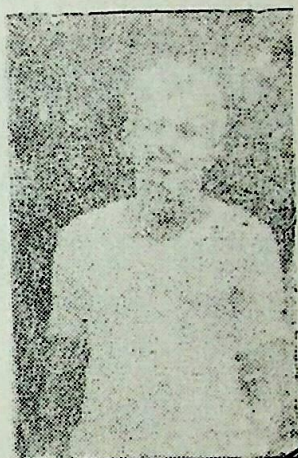
तृतीय पुत्र प्रो० राधेश्यामधर द्विवेदी हैं जो प्रारम्भ में व्याकरण शास्त्र के अध्ययन की ओर लगाये गये पर वाराणसी के बहु आयामी संस्कृति के कारण इनको ब्राह्मणधर्म के साथ श्रमणविद्या के अध्ययन की ओर भी अभिमुख किया गया। यह प्राचीन-भारतीयसंस्कृति के अध्येता होने के साथ नवीनता की सामासिक संस्कृति के भी अध्येता हैं। फलतः इन्होंने इनसभी परम्पराओं के आर्ष ग्रन्थों के आधार पर उपनिषत्–सुत्तनिपात एवं प्लेटो के रिपब्लिक की सामाजिक एवं नैतिक व्यवस्था का अनुशीलन कर विद्यावारिधि प्राप्त की है। यह सम्प्रति सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के तुलनात्मक धर्मदर्शन विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष तथा गाण्डीवम् संस्कृत साप्ताहिकम् के सम्पादक एवं प्रकाशक हैं। इन्होंने सामाजिक समस्याओं के अध्ययन हेतु कैरियर एवार्ड प्राप्त किया था।

चतुर्थ पुत्र प्रो० रामसनेहीधर द्विवेदी प्रारम्भ से ही आधुनिक विज्ञान के छात्र रहे हैं। इन्होंने परम्परा क्रम में उत्पन्न होनेवाली कृषि शास्त्र की विविध विधाओं का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उत्पादन, विपणन तथा विकास का स्तुत्य प्रयास किया है।

इन्होंने केरल प्रान्त के कयंगुलम् कोकोनट संस्थान में नारियल पेड़ पर चढ़ने का यन्त्र तैयार किया तथा ड्राटफिजियोलाजी पर राष्ट्रीय एवं सार्कदेशों का चिनाय गोल्ड मिडल प्राप्त किया है। जूनागढ़ के ग्राउन्ड नट संस्थान में मूँगफली का उत्पादन वढ़ाने की तकनीकि बढ़ाकर प्रशंस-नीय कार्य किया। यह जूनागढ़ के मूगफली संस्थान के निदेशक भी रहे हैं। इन्होंने कृषि उत्पादन में सूक्ष्म तत्त्व, सूर्य ऊर्जा संश्लेषण, उत्पादन कार्यकी, बीज कार्यकी तथा लवण कार्यकी, पानी जमाव तथा उसकी कमी (Micro nutrient nutrition solar energy harvest, Production Physiology, seed Physiology and salt, water logging and water deficit) में कृषि पैदावार का स्तुत्य प्रयास किया जिसके फलस्वरूप उपर्युक्त सम्मान प्राप्त हुए। यह इण्डियन सोसाइटी आफ एग्रोटेक्नोलाजी एण्ड वायो-एनर्जी' नामक अखिल भारतीय संगठन के सचिव हैं। इसी प्रकार ICARI के द्वारा सञ्चालित गन्ना अनुसन्धान संस्थान लखनऊ में कम से कम पानी से अधिक से अधिक उत्पादन देने वाली गन्ना का इजाद किया है। पर संस्थान की विद्वेषात्मक वृत्ति ने इस स्तुत्य कार्य को लोकहित हेतु संप्रेषण में रुकावट डाली है। उन्होंने पर्यावरणगत वनस्पतियों के सूक्ष्म संश्लेषण की विशेषज्ञता पर १९७० में अपनी पी-एच० डी० उपाधि प्राप्त की है। वे सम्प्रति गन्ना संस्थान लखनऊ में प्लाण्ट फिजियोलाजी एवं वायो केमेष्ट्री के प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष हैं।
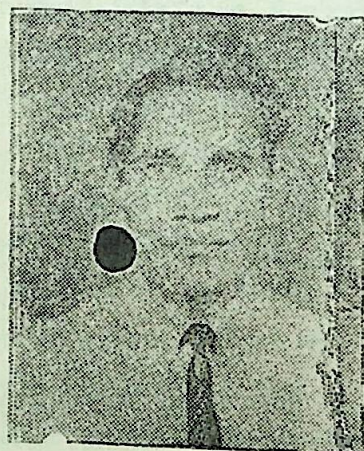
प्रो० कृष्णचन्द्र द्विवेदी तथा संयुक्तपरिवार

आज के युग में संयुक्त परिवार चलाना कष्टसाध्य कृत्य है पर भारत में ऐसे उदाहरण अनेकानेक उपलब्ध होते हैं। श्रीराम का अपने भाइयों के साथ का व्यवहार उसका चूडान्त निदर्शन है। श्रीराम का व्यवहार समग्र प्रजा जन के साथ पारिवारिक हित का भी था। परिवार एक ऐसी इकाई है जिसमें उसके मुखिया की ईमानदारी प्रत्येक सदस्य की जिम्मेदारी तथा सदस्यों का सहयोगात्मक रुख आवश्यक है। पारिवारिक परम्परा कायम रखने के लिए अर्जन करने वाले सदस्यों को परिवार के समग्र विकास में सहयोगी होना पड़ता है। यदि सब सदस्य बुद्धि विकास की दृष्टि से समान हों तथा पारिवारिक महत्व की स्थापना में सहयोगी हों तो संयुक्त परिवार चलाया जा सकता है।

परिवार में विवाह संस्था का महत्त्व होता है। संयुक्त परिवार में विवाह संस्था ही विभिन्न परिवारों को एक में मिला कर विभिन्न प्रान्तीय एवं जातीय सदस्यों को एकत्र करती है। परिवार प्राचीनता से नवीनता, ग्राम्य अञ्चलों से नगरीय सभ्यता की ओर बढ़ता है। फलतः पढ़े, बेपढ़ों के बीच सामञ्जस्य बैठाना, सभ्य तथा अर्धसभ्यों के बीच तालमेल बैठाना भी एक दुष्कर कार्य है। परिवार का मुखिया पारिवारिक बैठकों में इस खाई को पाटता है तथा प्रत्येक के उत्थान के लिए प्रोत्साहन देता है। इससे बाहरी परिवार से आने वाली महिलायें अपनी उच्च या हीन भावनायें त्याग कर पूर्ण परिवार के हित में काम करने लगती हैं तथा यदि समझदार हो तो किसी प्रकार का मनोमालिन्य नहीं रख पातीं। पर यदि तटस्थता के साथ स्वजन-भाव बढ़ता है तो समस्यायें खड़ी होती हैं। परिवार के लिए जैसे समग्र विकास आवश्यक है। वैसे पारिवारिक सदस्यों का समान स्तर तथा सामाजिकता भी संयुक्त परिवार को आगे बढ़ाने में सहायक होते है। प्रो० कृष्ण-

चन्द्र द्विवेदी के निर्देशन में विकसित होने वाले द्विवेदी परिवार के स्वरूप में उपर्युक्त भावों वाले सदस्यों का विकास संभव बन सका है। इसके पीछे गाँव के उन पड़ोसियों के इरादों का भी प्रतिकारात्मक भाव है जो कुटिलता के आधार पर संयुक्त परिवार का विघटन चाहते थे।

इब्नखल्दून ने कहा था कि किसी परिवार की या राष्ट्र की सल्तनत केवल चार पीढ़ियों तक चलती है क्योंकि चार पीढ़ियों तक के लोग अपने पूर्वजों की मेहनत, लगन तथा उद्देश्य से न केवल परिचित रहते हैं प्रत्युत देखकर सहभागिता भी ग्रहण करते हैं। यदि सहभागी लोग परम्परा के क्रम को स्वीकार कर विकास को महत्त्व देते है तो परिवार विकसित होता है और परम्परा को त्याग कर एकल विकास पर लग जाते हैं तो परम्परा के साथ परिवार भी नष्ट हो जाता है। इसीलिए संयुक्त परिवारों में अगली पीढ़ी के ऊपर परिवार की परम्परा को बरकरार रखने का भार होता है। परिवार की अगली पीढ़ी की शिक्षा, दीक्षा, व्यवहार तथा सम्मान का भाव विकसित करना आवश्यक है यदि वह पूर्वजों की देखा देखी परम्परागत भाव को कायम रख सकी तब तो ठीक है पर यदि आधुनिक युग के वैयक्तिक सुख सुविधाओं में लग गयी तो परेशानी खड़ी होती है। भारतीय परिवार में इसी दृष्टि से विवाह के अवसरों पर परम्परा की विशुद्धता, सामूहिक भावना तथा व्यवहार की शालीनता को देखा जाता है। जो लोग समाज समता के आधार पर शादी विवाह की बात करते हैं उनमें भी शालीनता तथा पारम्परिक संस्कृति की मर्यादा को मापा जाता है क्योंकि भावी समाज को राष्ट्रीय, सांस्कृतिक तथा परम्परा के क्रम में विकसित करने की अभिलाषा होती है जो पीढ़ी या लोग इस बात पर ध्यान नहीं देते वे च्युत हो जाते हैं और उनका सामाजिक महत्त्व समाप्त -- सा हो जाता है। पारिवारिक बैठकों में यह सब विचार का मुद्दा बनता है और ईमानदारी के साथ इस पर ध्यान दिया जाता है। क्योंकि परम्परागत समाज में परिवार का पितरों के प्रति श्रद्धाभाव तथा बदलते समाज में दैशिक संस्कृति के प्रति लगाव देखा जाता है।

उपर्युक्त विचारों के सन्दर्भ में एक सुविचारित नीति के आधार पर प्रो० कृष्णचन्द्र द्विवेदी ने सजांव में अपने परिवार को गति देना प्रारम्भ किया। फलतः चित्रकूट शिष्टमण्डल वाराणसी के कार्यक्रम से लेकर जंगली बाबा के आध्यात्मिक तपःस्थल के विकास तथा पं० कुबेरधर द्विवेदी शताब्दी समायोजना तक का सुनियोजित संचालन किया और परिवार, गांव तथा

भारतीय समाज के सही स्वरूप के आकलन में सफलता अवश्य प्राप्त किया। उन्होंने भारत में उत्पन्न समाज की उदारवादी दृष्टि को समझने के लिए अपने एक भाई को बौद्ध विचारों तथा समसामयिक सामासिक संस्कृतियों के अध्ययन की ओर लगाकर पारिवारिक गोष्ठी में बहस की गुन्जाइश रखी तो दूसरी तरफ गांव का विकास तथा घर की परम्परा अक्षुण्ण रहे एतदर्थं दैवयोग से घर पर खेती करने वाले अपने भाई को गार्हस्य भाव को विकसित करने हेतु संबल दिया तथा वैज्ञानिक ढंग से खेती कैसे हो एतदर्थं प्रो० रामसनेही धर द्विवेदी को कृषिज्ञान के अध्ययन एवं अनुसंधान में उत्प्रेरित किया। पारिवारिक, सामाजिक तथा मानवीय नियति को ध्यान में रखकर उनका ज्योतिषशास्त्रीय अध्ययन भी उपयोगी रहा। इस प्रकार आज जो उपर्युक्त आकलनों के आधार पर परिवार का स्वरूप कुछ-कुछ सार्थक दिखाई दे रहा है, उसके पीछे प्रो० कृष्णचन्द्र द्विवेदी की सार्थक आशावादिता तथा कठिन संघर्ष से जूझने की दृष्टि रही है। पारिवारिक सामरस्य रहने से आर्थिक तंगी में भी दिव्यभाव तथा दैवी संबल के लिए पूजापाठ का कार्यक्रम चलता रहा। समाज की प्रोन्नति में बाधक कही जाने वाली संस्कृतभाषा सामाजिक प्रतिष्ठा की संस्थापक बनी। छिन्न-भिन्न तथा अव्यवस्थित पारिवारिक गांव का केन्द्रबिन्दु घर प्रतिवर्ष १ मास के लिए आवासस्थल तथा गांव तीर्थस्थल बना रहा। गांव के प्रत्येक सदस्य बृहत्परिवार के सदस्य बने तथा होली एवं विवाहादि के उत्सवों में गांव की आत्मीयता का प्राकट्य समझ में आया। कतिपय गांव वालों ने पंडित जी के घर निर्माण में सहायता प्रदान कर उस घर को सरार के दूबे लोगों की संस्कृति का केन्द्र बनाने का प्रयत्न किया। भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मणों का ७५ प्रतिशत आबादी वाला गांव परस्पर में लड़ने वाला होकर भी सांस्कृतिक पर्यावरण को विकसित करने में सफल हुआ। फलतः जंगलीबाबा के पास शिवमंदिर, काली मां का मंदिर तथा रतन पाण्डे ब्रह्म का मंदिर बनाकर गांव ने धार्मिक तथा कन्या पाठशाला एवं जूनियर हाई स्कूल खोलकर शैक्षिक प्रोन्नति के साथ सांस्कृतिक प्रोन्नति को भी प्रस्तुत किया। जहाँ भरद्वाजीय ब्राह्मणों के इस गाँव में परम्परागत धनुंधारी द्रोण के आधार पर प्रतिवर्ष संघर्ष खड़ा रहता था वहां अब शिक्षा, शालीनता तथा पारस्परिक सौहार्द भी दिखाई देने लगा। न केवल ब्राह्मणों में प्रत्युत अविकसित जातियों तथा अनुसूचित लोगों में भी विकास एवं सांस्कृतिक निष्ठा का उद्भव हुआ। जिस गांव में मिलिट्री में सदा सैकड़ों लोग भर्ती होते थे वहां अब शिक्षा, आभियान्त्रिकी तथा चिकित्सा आदि क्षेत्रों में भी सैकड़ों का प्रवेश हो गया हैं। यह गत ५० वर्षों के सांस्कृतिक

उद्बोध की तथा आँखों देखी विकास की कहानी है। आचार्य द्रोण की परम्परा के संवाहक गाँव वाले आज भी अपनी संपूर्ण सांस्कृतिक निष्ठा के बावजूद संघर्ष के लिए सतत उद्यत रहते हैं पर यह संघर्ष मूल्यों की स्थापना के लिए कहा जा सकता है। प्रो० द्विवेदी के सही निर्देशन में जिस प्रकार का विकास हुआ, उसी प्रकार समाज का भी सांस्कृतिक विकास बना, यह भी कहा जा सकता है।

सावर्ण्य गोत्र तथा गोत्रप्रवरविशुद्धि

विवाह में गोत्रविशुद्धि असमानगोत्र होने से मानी जाती है। असमान गोत्र के साथ प्रवर भी असमान होना चाहिए अर्थात् वर का जो गोत्र और प्रवर होगा कन्या का उस गोत्र और प्रवर से भेद होना चाहिए। कहा भी है—असमानप्रवरैर्विवाहः अर्थात् असमान प्रवर के साथ ही विवाह होता है। मूल गोत्रकारक ऋषि चार हैं—

मूलगोत्राणि चत्वारि समुत्पन्नानि भारत।
अंगिराः कश्यपो चैव वसिष्ठो भृगुरेव च॥
कर्मतोऽन्यगोत्राणि समुत्पन्नानि भारत।
नामधेयानि तपसा तानि च ग्रहणं सताम्॥

इत्थम् अगस्त्याष्टसप्तर्ष्यन्यतममपत्यं साक्षात्परम्पराजातं यत् तद् गोत्रमुच्यते। तथा च स्मृतिः—

जमदग्निर्भरद्वाजो विश्वामित्रात्रिगौतमाः।
वसिष्ठकश्यपागस्त्या मुनयो गोत्रकारिणः।
एतेषां यान्यपत्यानि तानि गोत्राणि मन्वते॥

इस प्रकार चार मूलगोत्रकारकों से कर्मविधानानन्तर अन्य सात या आठ ऋषियों का समुद्भव हुआ और पुनः उससे विभिन्न ऋषियों की उत्पत्ति गणभेद के क्रम में मानी गयी है। वे ही गण में पठित ऋषि गोत्र कारक तथा प्रवर कारक बनते हैं। सावर्ण्य ऋषि चूंकि सप्त या अष्ट गोत्रकारक ऋषियों में नहीं हैं अतएव उनकी गोत्रकारिता गण में पठित होने से मान्य है।

सावर्णि ऋषि इन गोत्रविधायक सात ऋषियों के भृगु गण में माने गये हैं। क्रमसंख्या की दृष्टि से वे ३५वें स्थान पर गिने गये हैं। वे वत्सों में भी गिने जाते हैं। इन गोत्रकारक वंशों का पाँच प्रवर माना गया है और वे

पाँच ऋषि हैं--भार्गव, च्यावन, आप्नवान, और्व तथा जामदग्न्य या सावर्ण्य। इस गोत्र के वेद, शाखा, सूत्रादि का विवरण इस प्रकार है--

वेद-सामवेद, कौथुमी शाखा गोभिल या आपस्तम्बसूत्र, वाम शिखा, वामपाद, विष्णु देवता, भार्गव, च्यावन, आप्नवान, और्व और सावर्ण्य नाम के पञ्चप्रवर।

सावर्णि से उत्पन्न सावर्ण्य ऋषि भी गोत्रकारकों में गिने गये हैं—

गर्गश्च गौतमश्चैव शाण्डिल्यश्च पराशरः।
सावर्ण्यः कश्यपोऽत्रिश्च भरद्वाजोऽथ गालवः।
कौशिको भार्गवश्चैव वत्सो कात्यायनोऽङ्गिराः।
सांकृत्यो जामदग्न्यश्च षोडशैते प्रतिष्ठिताः॥

इस प्रकार सरवार प्रान्त में सावर्ण्य गोत्र के नाना ग्राम एवं स्थल प्रसिद्ध हैं जिनमें निम्नलिखित गाँव प्रमुख हैं—

अमलीडीहा, अष्टकपाल, आमडीह, इटारि, इन्द्रपुर, इमलीडाड़, एकौना, ककेढ़ा, कटसरई, कुरहवा, कूनाडीह, कोरी, कोहड़ा, कोहड़वल, गंगाराम का पुरवा, चमरुपट्टी, चारपानी, जोरवा, टिकरा, थुम्हवा (पण्डितपुरवा) नेपाल, देवरिया, नदियापुर, नसीराबाद, नहफरिया, नौरङ्गाबाद, पट्टी दिलीपपुर, पतिहापुर, अमवामंदिर तथा घोघरही (लक्ष्मीगञ्ज) आदि।

पं० महातमपाण्डेय एवं लक्ष्मीगंज (घोघरही)

माननीय वर पक्ष के अधिवक्ता श्री महातम पाण्डेय जी देवरिया जनपद के लक्ष्मीगंज (घोघरही) पड़रौना के रहने वाले हैं तथा सम्प्रति देवरिया एवं कसिया में प्रेक्टिस करते हैं। इनके बाबा पं० पवारु पाण्डेय जी आध्यात्मिक प्रकृति के व्यक्ति थे। जिन्होंने बगहा में रामजानकी मंदिर की स्थापना कराई तथा पूजा पाठ भलीभाँति हो, एतदर्थ व्यवस्थापक के रूप में एक पुजारी की नियुक्ति कराई। उनके तीन लड़के थे जो वर्तमान लक्ष्मीगंज में पितृनिवास पर अपनी वंशपरम्पराके रूप में अवस्थित हैं—
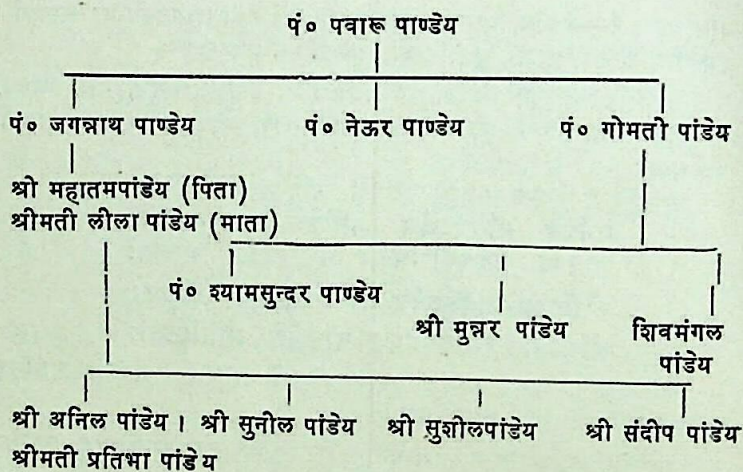
श्री महातम पाण्डेय देवरिया जनपद के वरिष्ठ अधिवक्ता हैं जिन्होंने हाई स्कूल की शिक्षा लक्ष्मीगंज, इन्टरमीडिएट तथा बी०ए० कुशीनगर एवं एम०काम और एल०एल०बी० परीक्षायें गोरखपुर से की हैं। इन्होंने देवरिया में वकीलों के आवास के लिए "हाउसिंग सोसाइटी" की स्थापना करके प्रसिद्ध अधिवक्ता श्री उमाशंकर पांण्डेय के नाम पर उमानगर की स्थापना की है। गौतमपुरी कालनी नामक कालनी का भी सोन्दा (देवरिया) के पास स्वरूप खड़ा किया। वकीलों के रहने के लिए 'वार विल्डिग' चन्दा उगाह कर बनवाया हैं।

श्री पाण्डेय जी कसिया वार एसोसिएसन तथा देवरिया वार एसोसियेशन के अध्यक्ष एवं मंत्री भी रह चुके हैं। इन्होंने देवरिया में मुद्रण हेतु "ओम मुद्रण प्रेस" तथा स्वास्थ्य परीक्षण हेतु "प्रिया पैथालोजी" की भी स्थापना की है। आपके घर में अधिववतृत्व पेशा के रूप में विकसित हो रहा है। आपके प्रथम पुत्र श्री अनिल पाण्डेय हैं जो प्रयाग हाईकोर्ट में अधिवक्तृत्व पेशा को अपनाये हैं। द्वितीय पुत्र सुनील पाण्डेय 'बी० काम' कर के विहार में बैंक में मैनेजर पद पर अवस्थित हैं, जिनकी शादी के अवसर पर यह विवरण प्रकाशित हो रहा है।

आप के घर में बाबा संस्कृतनिष्ठ पण्डित थे तथा ब्राह्मणत्व के प्रतिष्ठापक आचार्य रहे हैं और चाचा जिन्होंने आपको पालपोस कर बड़ा किया वे हैं श्री पं० नेऊर पाण्डेय जी। इन्होने वाल्यकाल में पिता के आकस्मिक निधन के वाद संरक्षक के रूप में पिता के स्थान की पूर्ति की।

श्री नेउर पाण्डेय जी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी तथा राष्ट्रभक्त कार्यकर्ता रहे हैं। पर उन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी का पेन्शन नहीं लिया और अपनी योग्यता से मिल में फीटर का काम करते हुए अपने भतीजों का पालनपोषण किया। संम्प्रति उनके परिवार में श्री महातम पाण्डेय ही एक मात्र सन्तान है जिनके चार पुत्र विभिन्न वृत्तियों में लगे हुए हैं। यद्यपि आप संस्कृतज्ञ नहीं है फिर भी ब्राह्मण संस्कृति के सम्यग्ज्ञाता तथा प्रसारक होने के साथ-साथ संस्कृत के संरक्षक भी हैं।

सजांव—वाराणसी तथा लक्ष्मीगंज

सजांव तथा लक्ष्मीगंज सरयूपार क्षेत्र में आते हैं। वाराणसी भारत का हृदय प्रदेश है तथा इसका सांस्कृतिक क्षेत्र संस्कृतविश्वविद्यालय गत दो शताब्दियों से हिन्दुओं का मूल केन्द्र है। हिन्दू संस्कृत पाठशाला के आधार पर हिन्दू उत्ताराधिकार, विवाह तथा झगड़ों का निपटारा संस्कृत पाठशाला की जूरियों से होता था। अत: यह विद्या संस्थान भारत के सभी लोगों का पूज्य स्थान है जो इस विवाह का स्थल है। वाराणसी धर्म की नगरी है अत: इस स्थल पर विवाह को धर्मकृत्य मानकर यहाँ सम्पन्न कराया जा रहा है। धर्म में कर्मकाण्ड, नीतिव्यवहार तथा संस्कृति का पक्ष रहता है। यह समाज को आश्रय लेकर चलता है। भारतीय कर्मकाण्ड आध्यात्मिकता को संजोकर चलते हैं। पर आज का युग भौतिकतावादी है और वह स्वार्थ के सामने सारे सांस्कृतिक मानकों का भंजन कर रहा है। फिर भी भारत में आध्यात्मिकता और भौतिकता की लड़ाई चल रही है। सेक्यूलर राष्ट्र भौतिक-वादी विवाह को प्रधानता देता है और सांस्कृतिक भारत की परम्परा आध्या-त्मिकतामूलक विवाह को मूल्य देती है। ऐसे में इन विरोधी वृत्तियों का परी-क्षण तथा समीक्षा करना आवश्यक है। आध्यात्मिकता के अभाव में सम्प्रति सर्वत्र आस्थाहीनता खड़ी हो रही है पर पारम्परिकता इस आस्थाहीन भाव में बढ़ रहे वैवाहिक कृत्यों को पसन्द नहीं करती तथा भारत में भौतिकवृत्ति पर आधारित परिवार असफलता प्राप्त कर रहे हैं। फलत: पारम्परिक कर्म-काण्डीय विवाह ही सफल हो रहे हैं। ऐसे में इस पारम्परिक आध्यात्मिक विवाह पर लगने वाले लौकिक भावात्मक ग्रह पर विचार करना चाहिए। आध्यात्मिक विवाह जन्मजन्मान्तर की अनुगामिनी संस्था है अतएव समाज में कर्मकाण्ड विधान इहलोक तथा परलोक का समन्वयक है।

यह पश्चिम की भाँति मात्र लौकिकविधान नहीं है। अतः परम्परा, संस्कृति, धर्म, नीति तथा समाज सापेक्ष इसका मूल्य बनता है। परम्परागत ढंग से सम्पन्न होने वाला विवाह अपने पूर्वजों के अविच्छिन्न भावों एवं संस्कृति का बोध कराता है। अतः हम अपनी परम्परा के ऋषियों के उदात्त भाव पर गर्व महसूस करते हैं हम सावर्ण्य या भरद्वाज के वंशज तथा गोत्र वाले बनकर श्रेष्ठता का भाव लाते हैं। यह भान सहज है इसीलिए सामाजिक दृष्टि से हीन समझने वाले लोगों ने लाखों करोड़ों की संख्या में धर्म परिवर्तन कर तथा दैशिक सांस्कृतिक निष्ठा को अपना कर अपना महत्त्व ख्यापित किया है। हम अपनी श्रेष्ठ परम्परा को आध्यात्मिकता के संबल पर यदि मूल्यात्मक रूप नहीं देंगे तो सम्भवतः हम भौतिकवादिता की लड़ाई से हार जाँय। अतएव हमको समग्र भारतीय संस्कृति तथा अध्यात्म के स्वरूप के साथ नैतिक ऊँचाई की व्यवस्था पर विचार करना चाहिए।

पारम्परिक विवाह कृत्य दो परिवार के लोगों में सम्पन्न होता है। इसलिए परम्परा के शाखोच्चार विधि से विवाह कराया जाता है। इससे वर वधू का व्यक्तित्व परिवर्तन हो जाता है ऐसी समग्रता से पूर्ण व्यक्तित्व परिवर्तन की मिशाल दुनिया में अन्यत्र कहीं नहीं मिलती। विवाह में सप्तपदी गमन में जब सातवाँ पद पूर्ण होता है तो कन्या का गोत्र पति का गोत्र बन जाता है और कन्या के व्यक्तित्व को सम्पूर्णतः परिवर्तित कर देता है। कहा भी है—

कन्यायाः पितृगोत्राद्यथोक्तविधिना भर्तृ गोत्रप्रापणं विवाहः।
स्वगोत्रात् भ्रंश्यते नारी विवाहात् सप्तमे पदे।
अलंकृत्य कन्यामुदकपूर्वां दद्यात् एष ब्राह्मो विवाहः।
ब्राह्मे विवाहे आहूय दीयते शक्त्यलंकृता इति याज्ञवल्क्यः॥

अब कन्या रातो रात पति के घर की बन जाती है उसका सारा व्यक्तित्व बदल जाता है अब उसके मातृ-पितृकुलीन स्वार्थों का मूल्य नहीं रहता और आध्यात्मिक दृष्टि से वह पतिगृह में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की अनुगामिनी हो जाती है। यदि यह आध्यात्मिक संस्कार से संस्कारित विवाह न माना जाय तो सम्भवतः पश्चिम की कामवासना वाली वृत्ति की तृप्ति बन जाय। फलतः भारत में भी सामाजिक दायित्व तथा बच्चों के दायित्व से मुकरने वाला विवाह बन जाय। पर भारतीय समाज ने विवाह को माँ बाप के द्वारा सुनियोजित करवा कर अपने परिवार, बच्चों तथा समाज के हित का जो स्वरूप खड़ा किया है। वह सुनिश्चित ही स्तुत्य कार्य है। एडस् रोग ने एक

पत्नीव्रत तथा एक पतिव्रत विवाह प्रथा को सार्थक मान भारतीय पद्धति को महत्व प्रदान किया है। आज का वैज्ञानिक भी इस पद्धति की विशेषताओं की ओर आकर्षित हो रहा है।

आज भारतीय समाज की कुछ वैज्ञानिक मान्यताएँ पुनः जागरूक हो रही हैं। एक नाड़ी पड़ने पर वर वधू सन्तान हीन हो जाते हैं। एक परिवार गोत्र या प्रवर में प्रेम विकसित नहीं हो पाता। पति पत्नी का निर्देशन माँ बाप की साया में हो, आदि पारम्परिक मूल्य आज सार्थक साबित हो रहे हैं। हाँ परम्परा की कुछ त्रुटियाँ आज के युग में समस्यायें खड़ी कर रही हैं उनसे सतर्क होने की आवश्यकता है। संस्कृत विश्वविद्यालय के इस विवाह स्थल पर उन समस्याओं पर भी विचार करना होगा और ब्राह्मण समाज तथा भारतीय समाज को इन कुरीतियों से पृथक् होना होगा, जिससे समाज में सांस्कृतिक ऊँचाई व्यवहारगत अच्छाई के परिमाप पर सम्बन्ध कायम हो सके।

प्रस्तुत प्रसंग में प्रो० कृष्णचन्द्र द्विवेदी एवं अधिवक्ता श्री महातम पाण्डेय के नेतृत्व में सम्पन्न होने वाले कु० सोमा द्विवेदी एवं श्री सुनील कुमार पाण्डेय के वैवाहिक कार्यक्रम का स्वरूप दीर्घायुमूलक हो इसकी समग्र उपस्थित ब्राह्मण समाज कामना करता है। भौतिकवाद के आधार को छोड़कर आध्यात्मिक भावना से युक्त हो, समग्र परिवार, समाज, देश, धर्म तथा जाति के हित का संस्थापक बने, यह ब्राह्मणों की कामना हैं। गंगा, सिन्धु, सरस्वती, यमुना, गोदावरी, नर्मदा, कावेरी, सरयू, राप्ति, शिप्रा, गण्डकी आदि नदियाँ अपने पूर्णजलों से इस परिणय वेला में मंगल प्रदान करें। अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, काञ्ची, पुरी, अवन्ती, द्वारिका आदि पवित्र नगर इनको पवित्रता के भाव से संप्रेषित करें। जम्बू द्वीप, प्लक्षद्वीप, शाल्मलीद्वीप, क्रौञ्चद्वीप तथा पुष्करद्वीप वर-वधू को मङ्गल प्रदान करें। दशो अवतारधारी भगवत्सत्तायें इनका कल्याण करें। सभी धर्म की पूज्य दिव्यात्मायें इनका कल्याण करें—यही मंगल कामना है।

आर्या ओमिति यं स्तुवन्ति विबुधा ओगाडितीशानुगाः।
अल्लाहेति मुहम्मदीयमतगा बौद्धास्तु बुद्धं विदुः॥
अर्हन्तं जिनगा अहूरमज्दं यं पारसीका जगुः।
सिक्खाः सत्श्री अकाल इत्यभिदधुः सोऽस्मान् शिवो रक्षतात्॥

ओं पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

सरयूपारीणब्राह्मणेषु सावर्ण्यभारद्वाजगोत्रयोः वैवाहिकी परम्परा

भारते भारते वर्षे पुण्ये समृद्धिसंयुते ।
चत्वारः प्रमुखा मान्या मूलगोत्रप्रवर्तकाः ॥ १ ॥
ऋषयो धर्मशास्त्रेषु प्रोक्ता अन्ये तदन्वयाः ।
अङ्गिराः कश्यपश्चैव वशिष्ठो भृगुरेव च ॥ २ ॥
एतदन्वयसम्प्राप्ता सप्त वाष्ट महर्षयः ।
गोत्राणां विविधानाञ्च प्रवराणां प्रवर्तकाः ॥ ३ ॥
समाख्याताश्च विख्याताः सर्वशास्त्रेषु नामतः ।
जमदग्निभरद्वाजौ विश्वामित्रात्रिगौतमाः ॥ ४ ॥
वशिष्ठकश्यपागस्त्या मुनयो गोत्रकारिणः ।
एतेषां यान्यपत्यानि तानि गोत्राणि मन्वते ॥ ५ ॥
तेष्वेव गणविख्याता प्रवरस्य प्रवर्तकाः ।
एते महर्षयः सिद्धा दिव्यशक्तिसमन्विताः ॥ ६ ॥
नदीनां सङ्गमे जाता पर्वतोपत्यकासु च ।
उपह्वरे गिरीणाञ्चेत्यादिप्रवचनाच्छ्रुतेः ॥ ७ ॥
देविकायास्तटे पुण्ये ब्राह्मणानां जनिः किल ।
श्रूयते तेऽभवन् ख्याता दाविकास्तत एव च ॥ ८ ॥
अर्धयोजन - विस्तारा पञ्चयोजनमायता ।
एतावती देविका तु पुण्या देवर्षिसेविता ॥ ९ ॥
तस्यां सर्वे समुत्पन्ना ब्राह्मणा द्विजसत्तमाः ।
अनेन हेतुना विप्रा दाविकाख्याः प्रकीर्तिताः ॥ १० ॥
ततो गच्छेत्तु राजेन्द्र ! देविकां लोकविश्रुताम् ।
प्रसूतिर्यत्र विप्राणां श्रूयते भरतर्षभ ॥ ११ ॥
विप्रप्रसूतिः सा पुण्या देविका सरिताम्बरा ।
सरयूनामविख्याता ह्यद्यत्वे लोकपूजिता ॥ १२ ॥

देविका पश्चिमे पार्श्वे मानसं सिद्धसेवितम्।
तस्याः प्रभवति पुण्या सरयू शृणु सादरम् ॥ १३ ॥
एकैव विमला धारा तोयाख्या विविधाभिधा।
सरयू घाघराऽन्यत्र देविका भजते पुनः ॥ १४ ॥
सरयूसहायिकानद्यः विविधा लोकविश्रुताः।
तासु श्रेष्ठाऽचिरवती क्वचित् ताप्तीति कथ्यते ॥ १५ ॥
नारायणी गण्डकी च द्वे नद्यौ विश्रुते तथा।
ब्राह्मणानां समुत्पत्तौ महत्व बहतः पुनः ॥ १६ ॥
देवरिया—जनपदात् पूर्वतो गण्डकी नदी।
बहन्ती सरयूं याति गङ्गां नारायणी तथा ॥ १७ ॥
एतासां तु सुदीनां क्षेत्रं पुण्यतमं मतम्।
सरवारेति सरयूपारेति विश्रुतं शुभम् ॥ १८ ॥
गोण्डा - वस्ती-देवरिया - चम्पारण्यमतं शुभम्।
वहरायिच गोरखपुरं सीवानमेव च ॥ १९ ॥
व्याध्रसरः छपरेति सरयूपार उच्यते।
एतत्क्षेत्रं प्रजाता ये ब्राह्मणाः श्रेष्ठवित्तमाः ॥ २० ॥
आदिगौडा इति ख्याताः तपसा लब्धचक्षुषः।
सरयूपारीणनाम्ना त एव लोकविश्रुताः ॥ २१ ॥
न कर्षन्ति स्वयं भूमिं हलेन सत्यवादिनः।
धुम्रपा मद्यपा नैव न च याचन्ति यौक्तिकम् ॥ २२ ॥
नित्यं स्वाध्यायशीलास्ते तथा प्रवचने रताः।
तापसाः पुण्यप्रभवा धर्मकामा दयालवः ॥ २३ ॥
एतत्प्रसूतयः सर्वे पृथिव्यां ये च ब्राह्मणा।
तथैतिहयविदः प्राहुः किञ्चिदुध्रियते मया ॥ २४ ॥
द्राविडाः पञ्च प्रजाताः पञ्चगौडेभ्य एव च।
आदिगौडस्य यत्स्थानं तदेव पाञ्चगौडिकम् ॥ २५ ॥
प्राहुः पण्डितवर्यास्तु सर्वशास्त्रविशारदाः।
पुराणेतिहासगाश्च यद्धि तल्लिख्यतेऽधुना ॥ २६ ॥

अयोध्या दक्षिणे यस्मात् सरयू - तटगः पुनः ।
सरवारप्रदेशोऽयं गौडास्तदनुकीर्तिताः ॥ २६ ॥
एतद्देशप्रसूता ये ब्राह्मणाः पुण्यभाजिनः ।
श्रीराम पूजिता बन्द्याः प्रशस्ताचारिणो मताः ॥ २८ ॥
गोत्रप्रवरमञ्जर्यां विस्तरेण प्रकीर्तितम् ।
गोत्राणां प्रवराणाञ्च तत्र द्रष्टव्यमीप्सुभिः ॥ २९ ॥

गोत्रप्रवरविशुद्धिः

विवाहे गोत्रसंशुद्धिरसमानत्वमुच्यते ।
एकगोत्रविवाहस्तु वर्जितः शास्त्रवित्तमैः ॥ ३० ॥
समानप्रवरश्चापि विवाहो नैव सम्मतः ।
पतत्येव च तत्कर्ता गर्हितोऽन्वयवर्जितः ॥ ३१ ॥
अतो समानगोत्रे च प्रवरे चापि सम्मतः ।
विवाहो वर्जितः शास्त्रे भवत्येवं प्रतिष्ठितः ॥ ३२ ॥

सावर्ण्यगोत्रम्

सावर्ण्यर्षिर्न गोत्राणां प्रवराणाञ्च कारके ।
चतुष्के सप्तमे वाथ नाष्टमे गणितः क्वचित् ॥ ३३ ॥
किन्तु सप्तर्षिषु भृगुः विख्यातो गोत्रकारकः ।
पञ्चत्रिंशत्तमे तस्याऽन्वये जातो महानसौ ॥ ३४ ॥
वत्सगोत्रेष्वपि तथा सावर्ण्यो गणितो मुनिः ।
वत्सेषु पञ्चप्रवरा मताः शास्त्रेषु विश्रुताः ॥ ३५ ॥
भार्गवश्च्यवन और्व आप्नवान् जामदग्न्यकः ।
सावर्ण्यः पञ्चप्रवराः वत्सानां श्रुतिसम्मताः ॥ ३६ ॥
वेदेषु साम शाखा सु कौथुमी सूत्रगोभिलम् ।
वामा शिखा वामपादः देवता श्रीहरिर्मतः ॥ ३७ ॥
सावर्ण्योऽपि मुनिरसौ सम्मतो गोत्रकारकः ।
गर्गश्च गौतमश्चैव शाण्डिल्यश्च पराशरः ॥ ३८ ॥

सावर्ण्यः कश्यपोऽत्रिश्च भरद्वाजोऽथ गालवः ।
कौशिको भार्गवश्चैव वत्सो कात्यायनोऽङ्गिराः ॥३९॥

सांकृत्यो जामदग्न्यश्च षोडशैते प्रतिष्ठिताः ।
सरवारेषु सावर्ण्यगोत्राणां बह्वो मताः ॥
ग्रामाः पुण्यप्रदेशास्ते स्फीता जनपदास्तथा ॥ ४० ॥

महातमपाण्डेयः तत्स्थानं लक्ष्मीगञ्जः

सावर्ण्यगोत्रप्रभवः पाण्डेयः जनविश्रुतः ।
वरपक्षे स्थितः श्रीमान् यशस्वी श्रीमहात्तमः ॥४१॥
देवरिया—जनपदे लक्ष्मीगञ्जे वसत्यसौ ।
अधिवक्ताधिकरणे प्रवक्ति 'कसया'स्थले ॥४२॥

पितामहस्तस्य पवारुसंज्ञः
अध्यात्मवृत्तिः वगहाख्यखण्डे ।
संस्थापयामास च रामसीता—
सुमन्दिरं भक्तियुतः शिवाय ॥४३॥

तस्यात्मजाः भक्तिमतास्त्रयस्ते
वसन्ति वंशागत-धर्मभाजः ।
ग्रामे निजे पितृपरंम्परायाँ
सुखेन सत्यव्रतदानशीलाः ।४५।
जगन्नाथो नेउरश्च
गोमती चेति नामतः ।
त्रिषु ज्येष्ठाद् जगन्नाथात्
ज्येष्ठोऽभूद्धि महातमः ॥४६॥
अधिवक्ता वरिष्ठोऽसौ
देवरिया—प्रमण्डले ।
शिक्षितो दीक्षितश्चापि
श्रेष्ठो हि विधिवित्तमः ॥४७॥
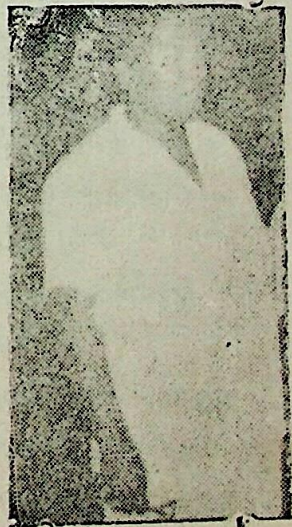
सौविध्यायाधिवक्तृणां निवासायाध्ययनाय च ।
आवासं स्वप्रयत्नेन कृतवान् कुशलः सुधीः ॥४८॥
कार्यमन्यद् हि सुमहत् बहुजनहिताय वै ।
उदारः कृतवान् पुण्यं यशसा मण्डितो भृशम् ॥४९॥
तस्य ज्येष्ठः सुतः श्रीमान् अनिलाख्यः सुबुद्धिमान् ।
विधिवेत्ता प्रयागोच्चन्यायालये प्रवक्त्यसौ ॥५०॥
पितृवदधिवक्तृत्वमाप्तवान् विधिवित्तमः ।
विख्यातिं लभते सम्यक् न्यायसत्येऽनुपालयन् ॥५१॥
महातमस्य महतः द्वितीयस्तनयः शुभः ।
श्रीमान् सुनीलपाण्डेयः रूपसौभाग्यसंभृतः ॥५२॥
कोषाध्यक्षपदेऽद्यत्वे नियुक्तः शिक्षितः सुधीः ।
कामर्षे स्नातकः सौम्यः शीलवान् सत्यवाक् शुचिः॥५३॥
अस्योद्वाहे शुभे शम्भुप्रसादात् आगते शिवे ।
प्रकाश्यते परिचयः विप्रवंश - प्रदर्शकः ॥५४॥
एतत् समृद्धे कुलशीलयुक्ते
सावर्ण्यगोत्रे श्रुतिपण्डितोऽभूत् ।
पवारुसंज्ञः सुरभारतीज्ञः
पितामहस्तु महनीयकीर्तिः ॥५५॥
तस्य द्वितीयस्तु सुतः सुकीर्तिः
श्रीनेऊराख्यः समुदारचेताः ।
पितृव्यपादस्तु वरस्य जातः
पितेव गोप्ता जनके प्रयाते ॥५६॥
प्रतापवान् राष्ट्रहिताय युक्तः
स्वतन्त्रायुद्धमहारथी च ।
पुपोष बन्धोस्तनयान् समस्तान्
आजीवनं स्नेहदयामना: सः ॥५७॥

महातमः संप्रति तत्र वंशे
जयत्यसौ वै तनयैश्चतुर्भिः ।
वृत्तैश्च विद्याविनयैरुपेतैः
परम्पराचारयुतैः सुरूपैः ॥५८॥
वरः सुनीलः शुभलक्ष्मणोऽसौ
सावर्ण्यगोत्रो गुणवान् प्रभावान् ॥
सोमाभिधायाः शुभलक्षणायाः
वृतो भरद्वाजसुकन्यकायाः ॥५९॥

भारद्वाजगोत्रस्यान्वयः

सप्तर्षयस्तु संजाताः कल्पादौ ब्रह्मणो मखात् ।
यज्ञेन ब्रह्माजनयत् सप्तर्षीन् ब्राह्मणान् पुरा ॥
मरीचिरङ्गिरा अत्रिः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः ।
षडेते ब्रह्मणः पुत्राः वीर्यवन्तो महर्षयः ॥
वसिष्ठो मृत्युमापन्नः शेषे षट्के ऋषिद्वयम् ।
पुलस्त्यः पुलहश्चैव असुराणां गुरू मतौ ॥
तस्माच्चत्वार एवैते ब्रह्मगोत्रप्रवर्तकाः ।
मरीचिरङ्गिरा अत्रिः भृगुश्चैते महर्षयः ॥
जमदग्निः भृगोर्जातः भरद्वाजश्च गौतमः ।
जातावङ्गिरसस्तस्मात् मरीचेरभवन् त्रयः ॥
कश्यपश्च वसिष्ठश्चागस्त्यश्च महामुनिः ।
अत्रेर्द्वौ च सुविख्यातौ विश्वामित्रोऽत्रिसंज्ञकः ॥
एते बह्मर्षिपुत्रास्तु अष्टौ परिगणिता मताः ।
समग्राणां प्रजानाञ्च मूलभूता महर्षयः ॥
भरद्वाजस्य ब्रह्मर्षेः पूतस्याङ्गिरसस्य च ।
वंशजाः त्रिविधाः प्रोक्ताः पुराणेषु च सम्मताः ॥

प्रथमं भारद्वाजा द्वितीयं द्वामुष्यायणाः ।
क्षत्रत्वं समनुप्राप्ताः तृतीयं ब्राह्मणास्तथा ।।
भरद्वाजप्रजातेषु प्रमुखेषु च त्रिष्वपि ।
भारद्वाजाङ्गिरसयोर्नोद्वाहश्च बृहस्पतेः ।।
भरद्वाजगणे जाता ऊनाशीत्यधित्रिशतम् ।
ऋषीणां वंशजाः सभ्यास्तान् विबोध प्रयत्नतः ।।
कात्यायनस्य ज्ञानेन बौद्धायनेन वा पुनः ।
वेदेषु खलु सन्त्येव कतिचित् मण्डलानि हि ।।
कुलमण्डलरूपेण भरद्वाजो ह्यवस्थितः ।
भरद्वाजस्य सूनुस्तु द्रोणोऽभवत् विचारधीः ।।
कठश्चाप्यभवच्छिष्यः दिवोदासस्तथैव च ।
मन्त्रगोपनसन्दर्भे भरद्वाजः श्रुतस्सदा ।।
आयुर्वेदं भरद्वाजश्चकार साभिषक्क्रमात् ।
तमष्टधा पुनर्व्यस्य शिष्येभ्यः प्रत्यपादयत् ।।
प्रवरो भरद्वाजस्य त्रिसंज्ञः कथ्यते खलु ।
आंगिरसो भारद्वाजो बार्हस्पत्यो तथाऽपरः ।।
वेदस्तु शुक्ल एव स्यात् उपवेदस्तथा धनुः ।
शाखा माध्यन्दिनी सूत्रं कात्यायनशिखस्तथा
चरणो दक्षिणो जातो शङ्करः कुलदेवता ।।

सजांवग्रामस्थाः पं० कुबेरधरद्विवेदिनो वंशजाः

सरवारे पुण्यभूमौ देवरियाप्रमण्डले ।
भरद्वाजस्य वंशस्य दृश्यते बहुविस्तरः ।।
सरय्वा उत्तरे तीरे तपोभूमौ सुमङ्गले ।
सजांवाख्यबृहद्ग्रामे पावने विप्रसेविते ।।

आश्चर्यभूतोऽचरज द्विवेदी
गुणैर्विशुद्धैर्विबुधोपमः सः ।
जातो भरद्वाजकुले पवित्रे
पूज्यो वरो वंशकरः कृपालुः ॥
तस्मात्परः परशुरामपितामहोऽभूत्
ख्यातो बली सकलविप्रगुणानुबद्धः ।
सद्वृत्तिसत्यवचनः पितृवत्प्रपन्नः
तस्थौ समग्रकुलरीतिपरम्परासु ॥
तातस्ततो वरकुबेरधरद्विवेदी
कौलीं धुरं परिवहन् समुदारचेताः ।
वन्धुप्रियः सुयशसा परिमण्डितोऽभूत्
संवर्धयन् निजकुलश्रियमुत्तमां सः ॥

पत्नी बभूव रजला पतिदेवतास्य
साध्वी स्वभावसरला जननी सुवत्सा ।
भक्तिप्रिया कृतमतिः परमेश्वरे सा
पूज्या वरा गुणवती करुणावतारा ॥
तातग्रजो नन्दकिशोरसंज्ञः
पितृव्यपादोऽग्रजवद्बभूव
जाता ततो हि बवयाशुभाङ्गी
भ्रातृप्रिया सा भगिनी गुणाढ्या ॥
श्रीमान् कुबेरः तपसाभिवृद्धः
धर्मप्रियः वंशकरः स्वपत्न्याम् ।
धर्मेण पुत्रान् चतुरः समर्थान्
अजीजनत् सर्वगुणोपपन्नान् ॥
ज्येष्ठस्तु तेषां गुणतोऽपि जातः
श्रीकृष्णचन्द्रः खलु सूर्यतुल्यः ।

संवर्धनः पुष्टिकरः कुलस्य
श्रीमान् यशस्वी विदुषां वरेण्यः ॥
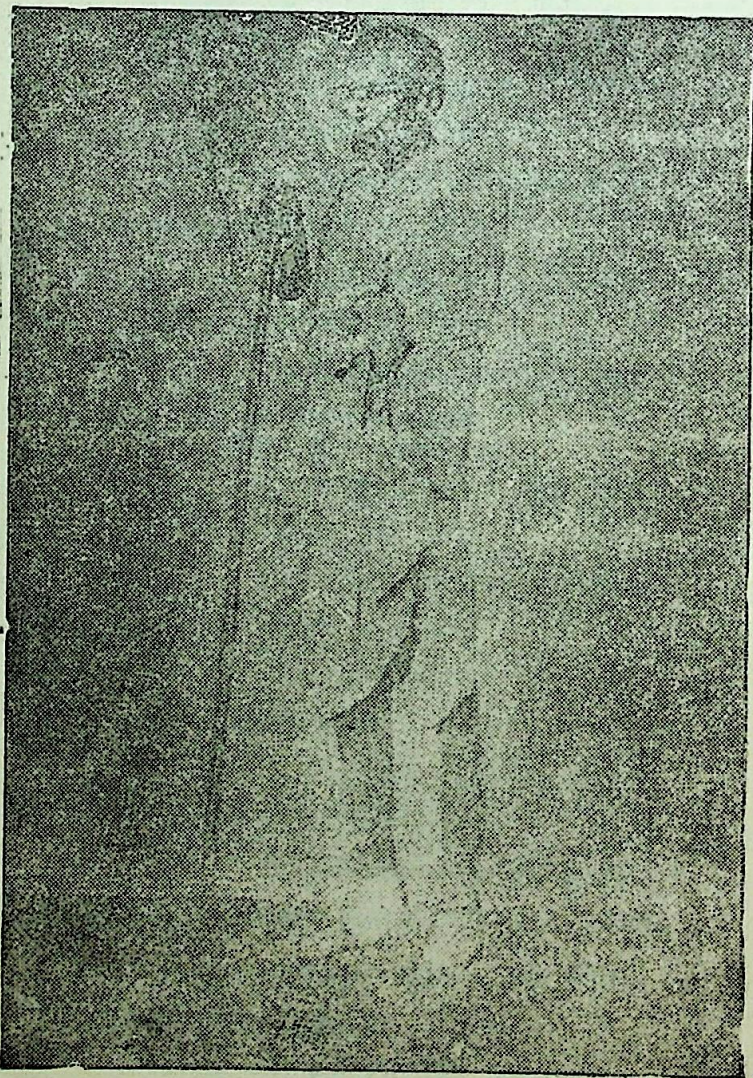
(पं० श्री कुबेरधर द्विवेदी)

सीताराम धरः श्रीमान् राधेश्यामधरस्तथा ।
रामस्नेही यवीयांसः भ्रातरः क्रमशः क्रमात् ।।

चत्वारो भ्रातरो धीरा
गम्भीरा सागरा इव ।
गुणरत्न - गणोपेताः
पूज्यन्ते जनसंसदि ।।

सीतारामो हि महतां
मान्यो विधानतो व्रती ।
धर्मिष्ठः कृषिकर्माणि
कुरुते यशसाभृतः ।।

वसन्त्यां निजभार्यायां
धर्मिष्ठायामजीजनत् ।
आशुतोष सुधीराख्यौ
पुत्रौ रूपाभिधा सुता ।।
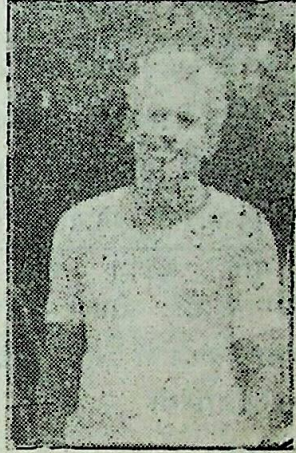
राधेश्यामधरो विलक्षणमतिः विद्यानदीष्णः शुभः ।
एकाकी प्रतिभाबलेन विचरत्यध्यात्मशास्त्रेषु वै ।

वाग्मी लोकहिताय संरतमनाः
सामाजिकः शीलवान् ।
सत्यः साधुचरित्रनिर्मलयशा
मित्रेषु बद्धादरः ।।
पाश्चात्यादिसमस्तदर्शनवने
संचारदक्षः हरिः ।
कर्माणि श्रुतिसम्मतानि कुरुते
लोकोपकारं तथा ।
भाषाविद् निजसंस्कृतिं वितनुते
रक्षन् वदन् संस्कृतम् ।
गाण्डीवं सुरवाचि पत्रमधुना
सम्पादयन् शोभते ।।

सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालये वरे ।
विभागाध्यक्षपदवीं दर्शनेऽलंकरोति सः ।।

तस्यामसावजनयत् सोमां मीरां च प्रेरणाम् ।
विद्वत्सभासु श्रुतिसम्मतस्य विमर्शनैर्विन्दति गौरवं हि ।
देशे विदेशे विविधप्रदेशे व्याख्यानसंवादविलेखनैश्च ।
सभ्यः सदासौ यतते हिताय लोकस्य मित्रस्य च बान्धवस्य ।
विद्वान् सदाचाररतः यशस्वी भास्वानिवस्वात्मबलेनभाति ॥
दमयन्ती समा भार्या दमयन्ती प्रतिव्रता ।
गृहकर्मरता नित्यं पतिभक्तिपुरस्कृता ॥
पुत्रीः सुधांशु तनयं विद्याविनयसंयुतम् ॥
रामस्नेहीधरः श्रीमान् कनिष्ठः स्नेहभाजनम् ।
त्रयाणामग्रजानां तु विद्याविनयशीलभाक् ॥
कृषिवैज्ञानिको दक्षः
परिश्रमे सदारतः ।
आदर्शव्यवहाराभ्यां
परां सिद्धिमवाप्तवान् ॥
विषयस्यानुसन्धाने
तथा तत्फलप्राप्तये ।
संलग्नोऽदृश्यत जनैः
पाकिस्तानरणार्णवे ॥
त्रिबीजस्यानुसन्धाने
नारिकेलस्य प्राप्तये ।
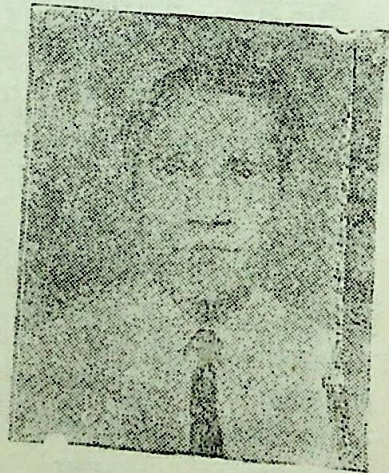
गन्नोत्पादनसौकर्ये सार्कस्य पदवीं दधत् ॥
अग्रजानुगतो धीरः शुचिः धर्मप्रियःकृती ।
भार्याऽरुणास्य धर्मिष्ठा पतिभक्तिपरायणा ॥
तस्यां सोऽजनत् दिव्यां पुत्रीं रूपवतीं गुणाम् ।
सिद्धार्थमिव सिद्धार्थं तनयञ्च महोदयम् ॥

लक्ष्मणपुरसंस्थाने गन्नोत्पादननामके ।
कार्यं सम्यक्समाधत्ते प्राच्यपाश्चात्यभाषया ॥

तेषां चतुर्णां भ्रातॄणां कृष्णचन्द्रः प्रतापवान् ।
ज्येष्ठः सर्वगुणैर्युक्तः विद्वान् ज्योतिषिवित्तमः ॥

मणिमालासमस्यास्य परिवारस्य सर्वतः ।
सूत्रमिव दृढं सोऽस्ति प्रेमौदार्यदयान्वितः ॥

दृढः सुशीलः प्रभया प्रदीप्तः
बन्धुप्रियः सर्वकलाप्रपन्नः ।
श्रीकृष्णचन्द्रो विमलश्रवाः सः
जातः समुद्रादिव शीतरश्मिः ॥

सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालये परे ।
ज्योतिर्विभागाध्यक्षस्यासावलंकृतवान् पदम् ॥
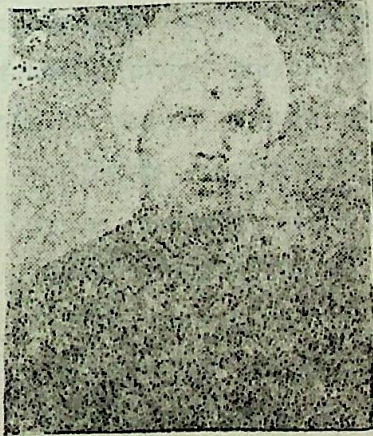
ज्योतिर्विदामस्य पदं प्रसिद्धं
देशे विदेशे विपुलं यशश्च ।
निर्माप्य विद्वान् खलु वेधशालां
परोपकारं कृतवान् महान्तम् ॥

सौहार्दं तनुते स्वबन्धुषु परं स्नेहं कुलोन्नायकः ।
तद्धेतोरधुनापि सौख्यमुदयः प्रीतिः समृद्धिःपरा ।।
साहित्यं सुमतिश्च मङ्गलमयं कार्यञ्च सम्पद्यते ।
संयुक्तिः सकलस्य तस्य परिवारस्य प्रभूतिः प्रभा ।।
परिवारस्य महतः सर्वसौख्यकरः कृती ।
देहस्येव परः प्राणः कृष्णचन्द्रः प्रतापवान् ।।
कुलस्यास्य च ग्रामस्य मण्डलस्यापि सर्वथा ।
देशस्य सभ्यतायाश्च संस्कृतेः संस्कृतस्य च ।।
हितकर्ता भावरतः विद्यया विविधैर्गुणैः ।
समुन्नायक एवासौ चरितैर्विमलैरपि ।।
देवयानी शुभापत्नी श्रुतिशीला पतिव्रता ।
परिवारः सुखश्रेयःचिन्तनव्यग्रमानसा ।।
तस्यामसावजनयत् शीलां च सवितां सुताम् ।
अरविन्दं सुतं श्रीमान् कुलस्यास्य विवर्धनम् ।।
वन्दनीयश्च पूज्यश्च कुलस्योन्नायकः प्रभुः ।
कृष्णचन्द्रः सुधर्मात्मा चन्द्रमा इव शोभते ।।

सोमासुनीलयोः शुभाशंसनम्

राधेश्यामधरस्यात्र ज्येष्ठपुत्र्याः शुभोदये ।
विवाहे मङ्गलमये सोमायाः समुपस्थिते ।।
सावर्ण्यकुलजातेन सुनीलेन वरेण वै ।
लिखितो वंशविस्तारः सावर्ण्यभरद्वाजयोः ।।
उभयोर्वंशयोः पुण्याचारधर्मभृतो शिवः ।
विवाहः श्रेयसे भूयात् मङ्गलायोदयाय च ।।
वरकन्यकयोः सर्वविधोन्नतिः सुसन्ततिः ।
भूयाच्च शुभं प्रसादेन भवानीविश्वनाथयोः ।।

पं० कुबेरधर द्विवेदी

ग्रा० पो०—सजाँव, जि०—देवरिया

(उ० प्र०)